कर्म ही प्रधान

प्राचीनकाल में महावीर के युग में गोशालक हुआ, उसका सिद्धांत था पुरूषार्थवाद । नियतिवाद । महावीर ने बताया कि तुम अपने भाग्य को बदल सकते हो । कर्म को बदल सकते हो , अगर तुम्हें सही रास्ता मिल जाए । नदी के तट पर बने शिव मंदिर में एक पंडितजी और एक चारे दोंनो प्रतिदिन आते । पंडित शिवलिंग पर फल–फुल और दूध चढ़ाकर शिवजी की स्तुति करता, जबकि चोर शिवलिंग पर डंडा मारते हुए अपने भाग्य पर कोसता था ।

एक दिन पंडित और चोर दोनों मंदिर से एक साथ बाहर निकल रहे थे । तभी चोर को मंदिर के द्वार पर अशर्फियों से भरी एक थैली मिली और पंडिलजी के पैर में लोहे की एक नुकीली कील चुभ गई । स्वर्ण मुद्राएं मिलने से चोर को बड़ा खुश हुआ, किंतु पैर में घाव हो जाने से पंडित बहुत दुःखी । तभी भगवान शिव प्रकट हुए और पंडित से रोने का कारण पूछा । पंडित ने कहा,

'दीर्घकाल तक आपकी पूजा और उपासना का यह फल है कि मुझे पैर का जख्म मिला और आपके ऊपर डंडा मारने वाले चोर को स्वर्ण मुद्राएं मिलीं । यही है आपका न्याय? शिवजी ने कहा, 'पंडितजी! आज के दिन आपके भाग्य में फांसी लगना लिखी थी, लेकिन मेरी पूजा करके अपने कर्म से आपने फांसी को केवल एक गहरे घाव में बदल लिया । इस चोर को आज के दिन राजा बनकर राजसिंहासन पर बैठना था, लेकिन इसने कर्मों ने केवल स्वर्ण मुद्रा से ही प्रसन्न कर दिया । भाग्य का बनना और बिगड़ना कर्म पर निर्भर है ।' हाथ की हथेली पर भाग्य की रेखाएं बनती बिगड़ती रहती हैं ।

– आर्चाय महाप्रज्ञ